॥ हरिः ॐ ॥

विद्यार्थी मोटा का पुरुषार्थ

पूज्य श्रीमोटा

लेखक :
मुकुल कलार्थी

अनुवाद - संपादन :
रजनीभाई बर्मावाला 'हरिः ॐ'

हरिः ॐ आश्रम प्रकाशन, सुरत

॥ हरिः ॐ ॥

विद्यार्थी मोटा का पुरुषार्थ

● लेखक ●

मुकुल कलार्थी

● अनुवाद - संपादन ●

रजनीभाई बर्मावाला 'हरिः ॐ'

हरिः ॐ आश्रम प्रकाशन, सुरत

© हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५

❑ प्रकाशक : हरि:ॐ आश्रम,
कुरुक्षेत्र, जहाँगीरपुरा, सुरत-३९५००५.
फोन : (०२६१) २७६५५६४, २७७१०४६
E-mail : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

❑ संस्करण : प्रथम प्रत-१०००

❑ मूल्य : ₹. 10 (दस रुपये)

❑ प्राप्तिस्थान : (१) हरि:ॐ आश्रम, सुरत-३९५००५.
(२) हरि:ॐ आश्रम,
पो. बो. नं. ७४, नडियाद-३८७००१.
फोन : (०२६८) २५६७७९४

❑ अक्षरांकन : दुर्गा प्रिन्टरी,
अवनिकापार्क सोसायटी, खानपुर,
अहमदाबाद-३८०००१.
दूरभाष : (०७९) २५५०२६२३

❑ मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.
सिटी मिल कम्पाउन्ड,
कांकरीया रोड, अहमदाबाद-३८००२२.
दूरभाष : (०७९) २५४६९१०१

॥ हरि:ॐ ॥

● समर्पणांजलि ●

पू. मोटाने अपने जीवनकाल में समाजसेवा के अनेकविध कार्यो पैकी, जिन भारतीय नागरिकने विज्ञान एवं गणित के विषय में एवं साहस शौर्य के क्षेत्र में अपनी बहुविध प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए भारत देश का नाम विश्व के मंच पर उजागर किया एसे नागरिक का सन्मान करते हुए प्रशस्तिपत्र एवं नगद अेवोर्ड / पुरस्कार अर्पण करने का कार्य प्रमुखस्वरूप से किया। पू. मोटा के देहत्याग (ता. २३-७-१९७६) के बाद यह परंपरा को आगे बढ़ाते हुए हरि:ॐ आश्रम, सुरतने अनेकविध एवं गुणसंपन्न व्यक्तिओं को सन्मानित किया है।

माहे जून २०१० में युरोप के जर्मनी देश में आयोजित विश्व की सबसे तेज गिनती करनेवाले विद्यार्थीओं की स्पर्धा में गणित विषय में विविध पहलुओ की प्रश्नोत्तरी का त्वरित मौखिक उत्तर देते हुए १२ वर्षीय कुमारी सुश्री प्रियांशी सोमाणी ने विश्व के तमाम रेकर्ड का भंग करते हुए, विश्वभर में प्रथम क्रम प्राप्त किया और विश्व श्रेष्ठ मेन्टल केलक्युलेटर एवं विश्व चेम्पियन इन ओवर ओल रेन्कींग के सन्मान पत्र के साथ विश्वकप प्राप्त किया है। विश्वभर में अपने परिवार का और भारत देश ना नाम उजागर करनेवाली विद्यार्थीनी का बड़े आदरपूर्वक सन्मान करते हुए हरि:ॐ आश्रम, सुरत ने आपको प्रशस्तिपत्र एवं पुरस्कार अर्पण किया है। आप की सिद्धिओं को प्रमाणित करते हुए आप के परिवार सदस्य

आदरणीय पिताश्री सत्येन सोमाणी
माता श्रीमती अंगु सोमाणी एवं आपश्री
तेजस्वी, प्रतिभावंत कु. प्रियांशी सोमाणी

को नम्र, प्रेमपूर्वक यह पुस्तक का प्रथम हिन्दी संस्करण समर्पित करते हुए आनंद और आदर की भावना व्यक्त करते है।

– ट्रस्टीगण

स्थल : सुरत
दिनांक : 1-4-2012

पू. श्रीमोटा हरि:ॐ आश्रम,
जहाँगीरपुरा, रांदेर, सुरत.

॥ हरिः ॐ ॥

● नम्र निवेदन ●

यह पुस्तक पू. श्रीमोटा के विद्यार्थी-जीवन से संबंधित है । पू. श्रीमोटा का साहित्य गुजराती भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध करने का यह एक नम्र प्रयास है ।

इस पुस्तक में पू. श्रीमोटा के विद्यार्थी-जीवन की जो जानकारी है, वह माहिती विद्यार्थिओं के लिए अत्यंत प्रेरणादायक एवं उपयोगी सिद्ध होगी । पू. श्रीमोटा ने बचपन से ही अपने परिवार की गरीब स्थिति देखकर माता-पिता को आर्थिक रूप से सहायक बनने की कोशिश की । यहाँ तक कि मजदूरी का काम भी किया । साथ में पढ़ाई की महत्ता समझते हुए प्राथमिक, हाईस्कूल एवं कॉलेज की पढ़ाई की व्यवस्था भी अपने बाहुबल से की । उनका संघर्षमय जीवन वर्तमानयुग में विद्यार्थिओं के लिए आदर्श उदाहरण बना रहेगा । इस पुस्तक के द्वारा विद्यार्थिओं को स्वावलंबी, परोपकारी, दयालु और मेहनती जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है । इस पुस्तक से प्रेरणा पाकर विद्यार्थिबंधु प्रामाणिक, उदार, सहनशील बनकर अच्छे नागरिक बनें ऐसी शुभ-कामना है ।

इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद हमारे ट्रस्टीमंडल के सदस्य श्री रजनीभाई बर्मावाला ने 'बालकों के मोटा' पुस्तक का कहीं कहीं सहारा लेकर किया है । इस लिए उस पुस्तक के अनुवादक डॉ. कविता शर्मा 'जदली' का आभार हम मानते हैं ।

पू. श्रीमोटा के पुस्तकों का मुद्रणकार्य साहित्य मुद्रणालय, अहमदाबाद के श्री श्रेयसभाई पंड्या अत्यंत प्रेमभक्तिभाव से करते हैं। उनका आभार व्यक्त करने के लिए हमारे पास शब्दों की कमी है। श्री श्रेयसभाई की आध्यात्मिक उन्नति के लिए हम पू. श्रीमोटा के चरणों में प्रार्थना करते है।

अंत में बालकों, विद्यार्थिओं के माता-पिता से प्रार्थना है कि इस पुस्तक को स्वयं के लिए तो जरुर खरीदें और अन्य बालकों, विद्यार्थिओं को भी भेंट देने खरीदें और अपनी मातृभूमि भारत माता के चरणों में कुछ अच्छे नागरिक समर्पण कर के मातृभूमि का ऋण अदा करें।

अस्तु। हरिः ॐ।

– ट्रस्टीमंडल,

स्थल : सुरत
दिनांक : 1-4-2012

हरिः ॐ आश्रम, सुरत.

॥ हरिः ॐ ॥

● अनुक्रमणिका ●

१. पढ़ने की लगन ७
२. पढ़ो और पढ़ाओ ११
३. पढ़ते-पढ़ते मजदूरी १२
४. मिस्त्री काम में गए १५
५. खेत में कपास बीनने १७
६. बुआई करने भी तैयार १९
७. वचन-पालन २१
८. पाठशाला में सफाईकाम करके पढ़े २६
९. डेढ़ साल में चार कक्षाएँ २८
१०. निरीक्षक का दिल जीता ३१
११. मेरा काम देखें बाद में रखें ३४
१२. झूठ का व्यापार नहीं होगा ! ३७
१३. विद्या विनय से सुशोभित ४२
१४. संत ने सहायता की ४५
१५. वडोदरा कॉलेज में ५०
१६. डेढ़ आने में भोजन ५२
१७. बुरी लत को छोड़ो ५४
१८. गांधीजी की पुकार ५६
१९. मोटा की उलझन ५७
२०. कॉलेज को अलविदा ! ५९
२१. गुजरात विद्यापीठ में ६०
२२. देशसेवा के कार्य में ६२

॥ हरि:ॐ ॥

१. पढ़ने की लगन

मोटा, गाँव की प्राथमिक पाठशाला में पढ़ते थे ।

मोटा, घर में काम करते और पाठशाला में नियमित पढ़ते भी थे ।

उनको पढ़ना बहुत ही पसंद था ।

क्यों पसंद था, पता है ?

मोटा के बचपन में एक दु:खद प्रसंग बना था ।

उस प्रसंग ने उनके दिल में आग फैलाई ।

सुनिये वह प्रसंग ।

मोटा के पिताजी को हुक्का पीने की आदत थी ।

इसके लिए बारबार अंगारे चाहिए ।

इसलिए घर के आँगन में उपलों को सदा जलते हुए रखते ।

गाँव में सिपाही रात को चक्कर लगाने निकलते ।

भगतजी के आँगन में थकान मिटाने बैठते ।

कोई सिपाही हुक्के के दो-चार दम भी लगाते ।

भगतजी के साथ इधर-उधर की बातें भी मस्ती में करते ।

एक रात दो सिपाही गस्त लगाते हुए वहाँ आये ।

भगतजी के पास खटिया में बैठे ।

बातों ही बातों में एक सिपाही ने पूछा :

'अरे भगत । बरामदे की चारपाई में यह कौन सोया है ?'

भगतने उत्तर दिया :

'मेहमान है ।'

उस सिपाहीने पूछा :

'पुलिसचौकी में खबर क्यों नहीं दी ?'

उस जमाने में चोरी करनेवाली कुछ प्रसिद्ध जातियाँ थीं ।

उनके यहाँ यदि कोई मेहमान आये तो उसकी खबर पुलिसचौकी में देने का एक रिवाज था ।

इसलिए भगतजी ने कहा :

'हमें ऐसी खबर देने की जरूरत नहीं है ।'

यह सुनते ही न जाने क्यों सिपाही का गुस्सा काबू में न रहा ।

वह भगतजी को बेरहमी से पीटने लगा ।

पीटते-पीटते घसीटते हुए पुलिसचौकी को ले गया !

किशोर वय के मोटा बरामदे में ही सो रहे थे ।
वे यह देखकर एकदम स्तब्ध हो गए !
वे पिता की ऐसी दशा नहीं देख पाये ।
इतने में ही मोटा को कुछ उपाय सूझा ।
वे नागरवाडा की ओर दौड़ पड़े ।
नागरवाडा में रावसाहब मनुभाई रहते ।
वे भगत के कुटुम्ब को पहचानते थे ।
मोटा की माताजी उनके घर अनाज पीसने-कूटने का काम करने जातीं थी ।
मोटा ने मध्यरात्रि को दरवाजा जोर से खटखटाया ।
रावसाहब एकदम जाग गए ।
मोटा ने रोते-रोते कहा :
'साहब, मेरे पिता को बचाइए ।'
'सिपाही ने बेगुनाह पिता को बहुत पीटा ।'
'घसीटते हुए पुलिसचौकी को ले गए ।'
रावसाहब ने तुरन्त घोड़ागाड़ी जुतवाई ।
मोटा को लेकर पुलिसचौकी गए ।
उन्होंने भगतजी को छुड़वाया ।
यह सब देखकर मोटा को हुआ :
'दुनिया में गरीब की दशा बुरी है !'

'गरीब को सब कोई तिरस्कृत करे ।'

'उसका अपमान करे ।'

'हम भले ही गरीब हों ।'

'पर हमारा कोई अपमान न करे, उसके लिए क्या करें ?'

विचार करते हुए मोटा की समझ में आया :

'तहसील के मामलतदार को सभी सलाम करें ।'

'बड़े-बड़े लोग उन्हें मान दें ।'

'सभी उनकी आज्ञा मानते हैं ।'

'मुझे भी ऐसा बड़ा आदमी बनना है ।'

इस बारे में मोटा सोचने लगे ।

अंत में उन्हें उपाय मिल गया :

'बड़ा आदमी होना हो तो बहुत पढ़ाई करनी चाहिए ।'

तब से नन्हे से मोटा को पढ़ने की लगन लगी ।

भले ही असुविधा हो ।

भले ही दु:ख सहन करने पड़ें ।

यह सब सहन करते आगे पढ़ना ।

ऐसा दृढ़ निश्चय मोटा ने किया ।

वे अपने आप पाठशाला में पढ़ने जाने लगे ।

२. पढ़ो और पढ़ाओ

मोटा की याददास्त अच्छी थी ।

पाठशाला में बहुत ध्यान से पढ़ते ।

मोटा सब कुछ शीघ्र ग्रहण कर लेते ।

शिक्षक भी अच्छे थे ।

वे इस गरीब, मेहनती और होशियार विद्यार्थी पर प्रेम रखते ।

मोटा पाठशाला में केवल पढ़ते ही नहीं ।

मोटा खुद पढ़ते और पढ़ाते भी ।

कक्षा में कई विद्यार्थी पढ़ाई में कमजोर थे ।

मोटा उन्हें पढ़ाई में मदद करते ।

मोटा को बचपन से समझ थी :

'अन्य सभी चीजें देने से कम होती हैं ।'

'किन्तु विद्याधन जैसे-जैसे दूसरों को दें,

वैसे-वैसे बढ़ता जाता है ।'

'विद्यादान जैसा उत्तम दान दूसरा नहीं है ।'

इसलिए मोटा कमजोर विद्यार्थिओं को ध्यान से पढ़ाते ।

इस प्रकार मोटा विद्यार्थिओं के दुलारे हो गए ।
वे मोटा को अपने सच्चे मित्र मानने लगे ।
कहावत है न—
'दुःख में सहाय करे वह मित्र ।'

■

३. पढ़ते पढ़ते मजदूरी

मोटा आयु में छोटे थे ।
किन्तु समझ बड़ों जैसी थी ।
माँ बेचारी लोगों का अनाज पीसने-कूटने जातीं थी ।
माँ दूसरों के घर घरकाम करने जातीं ।
मोटा के मन में हुआ :
'मैं पढ़ने जाता हूँ सही ।
'किन्तु छुट्टी में घर में बेकार बैठे रहता हूँ ।'
'मैं ऐसे बैठा रहूँ यह कैसे चले ?'
माँ बेचारी कितना भार ढोएगी ?
'मुझे भी कुछ मदद करनी चाहिए ।'
'चलो मैं कहीं मजदूरी करने चलूँ ।'

एक बार मोटा को पता चला कि गाँव में ईंटों की भट्ठी में मजदूरी मिलती है ।

मोटा वहाँ अकेले पहुँच गए ।

देखभाल करनेवाले भाई ने पूछा :

'ऐ लड़के ! यहाँ क्यों आए हो ?'

मोटा ने प्रत्युत्तर दिया :

'काम करने ।'

वह भाई बोला :

'पाठशाला जाता है कि नहीं ?'

'तुझे काम करने की क्या जरूरत ?'

मोटा ने कहा :

'भाई, मैं पढ़ने जाता हूँ ।'

'किन्तु पाठशाला में अभी छुट्टी है ।'

'इसलिए काम करने आया हूँ ।'

वह भाई बोला :

'किन्तु मुन्ना, तेरा यहाँ काम नहीं ।'

'तूं ईंटें उठा पायेगा ?'

मोटा तो कुछ काम करना चाहते थे ।

घर में माता-पिता को थोड़ी कुछ मदद करनी थी ।

यों हिंमत हार जाएँ ऐसे वे न थे ।

मोटा ने हिंमत के साथ कहा :

'मैं ईंटें उठाऊँगा ।'

'मुन्ना, ईंटों की भट्ठी यानी धधकती हुई आग ।'

'उस में से ईंटें निकालना यह कोई खेल की बात नहीं है । क्या समझा ?'

'गरम-गरम ईंटें उठाते हाथ जल जाय !'

मोटा बिना गभराये बोले :

'मैं गरम-गरम ईंटें उठाऊँगा ।'

छोटे लड़के का उत्साह देखकर उस भाई ने कहा :

'अच्छा, तो आज से काम में लग जा ।'

'बीच में से भागना नहीं ।'

ईंट की भट्ठी में दूसरे मजदूर काम करते थे ।

मोटा उनके साथ मिल गए ।

मोटा सब के साथ गरम गरम ईंटें उठाने लगे ।

मोटा ने देखा कि उस भाई की बात सच्ची थी ।

यह कोई बालकों का खेल नहीं है ।

गरम-गरम ईंटें उठाते हाथ जल जाते ।

कई बार अंगारे की तरह भी जल जाय ।

नन्हे मोटा जल तो जाते ।
किन्तु पीछे हटें वे कोई दूसरे ।
मोटा गुपचुप दुःख सहन करते ।
बड़े आदमी जैसा ही काम करते ।
शाम को काम बंद होता ।
देखभाल करनेवाला भाई सब की ईंटें गिनने लगते ।
ईंट के अनुसार पैसा देते ।
मोटा पैसे लेकर घर दौड़ते जाते ।
हथेली और उंगलियाँ सिककर-जलकर लाल-लाल हो जातीं थीं ।
मोटा उस ओर ध्यान ही नहीं देते ।
मोटा को तो काम किया उसका आनंद ।
घर में थोड़ी-बहुत मदद की उसका आनंद ।
छुट्टी का अच्छा उपयोग करने का आनंद ।

■

४. मिस्त्री काम में गए

छुट्टी के दिन थे ।
मोटा काम की खोज में निकल पड़ते ।
मोटा कभी मिस्त्री काम में जाने तैयार होते ।

नन्हें से लड़के को देखकर मिस्त्री कहता :
'लड़के, तुम्हें यह काम आता है क्या ?'
'ठीक से काम करना ।'
'खेलना-बेलना नहीं ।'
'मेरा काम बीच में से अटकना नहीं चाहिए ।'
मोटा तो उत्साह से काम में लग जाते ।
मोटा को काम करने में आलस नहीं ।
जो काम हाथ में लेते, उसे पूरा दिल लगाकर करते ।
चाहे पाठशाला की पढ़ाई हो या मेहनत –
मजदूरी का काम हो ।
बचपन से मोटा को ऐसी समझ थी ।
मोटा रेती-सीमेन्ट आदि इकट्ठा करते ।
उचित मात्रा में पानी डालते ।
अच्छे ढंग से माल तैयार करते ।
बिलकुल आलस्य किए बिना ईंटें उठाते ।
मिस्त्री के आगे ठीक से ईंटें रखते ।
मिस्त्री यह सब देखता ।
मिस्त्री खुश हो जाता ।
शाम को काम पूरा होता ।

मिस्त्री मोटा को शाबाशी देते कहता :
'मुन्ना, तेरा काम मुझे अच्छा लगता है ।'
'कल भी काम करने समय से आ जाना ।'
'मैं तेरी राह देखूंगा ।'
'थोड़े दिन में तुझे सब काम सिखा दूँगा ।'
'बाद में तो तू भी अच्छा मिस्त्री बन जायगा ।'
'कमाता हो जायगा ।'
मोटा हकार में सिर हिलाते ।
मजदूरी के पैसे लेकर वे घर जाते ।
खुश होते होते जाते ।
मानों कि कहीं खेल खेलकर घर जा रहे हों ।
काम में भी खेल जैसा आनंद लूटते ।
जिससे मजदूरी भार जैसी न लगे ।

■

५. खेत में कपास बीनने

पाठशाला की छुट्टी में मोटा को बेकार बैठना बिलकुल अच्छा नहीं लगता ।

आसपास के खेतों में कपास बीनने का समय आता।

किसान कपास बीनने मजदूरों के रखते ।

मोटा ऐसा मौका क्यों चूकते ?

वे भी खेत में काम करने पहुँच जाते ।

डोंड़ी बीनने का काम मोटा बड़े उत्साह से करने लग जाते ।

छोटे-छोटे हाथ तेजी से काम करते ।

मोटा बड़े मजदूर को भी पीछे छोड़ देते ।

मजदूर तो चालाक हो गए होते हैं ।

थोड़ा काम करते और बीड़ी पीने बैठते ।

बीड़ी पीते पीते गप्पेबाजी करते ।

इतना ही नहीं, मजदूर काम भी धीरे-धीरे करते ।

शरीर का कष्ट जितना कम हो उतना अच्छा ।

काम कम करो या अधिक, किन्तु मजदूरी तो उतनी ही मिलेगी न ?

फिर काम अधिक क्यों करें ?

ऐसा मजदूर मानते ।

किन्तु मोटा कामचोरी नहीं करते ।

मोटा बचपन से मानते थे :

'हमें सौंपा गया काम ठीक ढंग से करना चाहिए ।'

'तो ही भगवान राजी होते ।'

'दानत वैसी बरकत ।'

शुद्ध दानत से काम करें तो उसका फल भी अच्छा मिलेगा ।

नन्हे से मोटा के ऐसे विचार थे ।

इस लिए मोटा खेत में भी पूरा दिन उत्साह से काम करते ।

शाम तक में तो डोंड़ी का ढेर बना देते ।

किसान राजी राजी हो जाता ।

मोटा की पीठ थपथपाकर किसान कहता :

'शाबाश ! मुन्ना, शाबाश !'

■

६. बुआई करने भी तैयार

खेत में बुआई का समय भी आता ।

मोटा यह काम करने भी तैयार ।

मोटा खेत में मजदूरी के लिए दौड़ जाते ।

किसान छोटा बालक जैसे मोटा को देखकर कहता :

'मुन्ना, सुनो ! पौधे बोने में ढिलाई नहीं चलेगी ।'

'बरसात मूसलाधार भले ही बरसता हो–

परन्तु काम ठीक चालू रखना पड़ेगा ।'

'इसमें छोटे बालक का काम नहीं ।'

'जा, मित्रो के साथ खेल-कूद ।'

मोटा विनयपूर्वक बोले :

'भाई, मुझे काम देकर देखें ।'

'काम देखकर मजदूरी देना ।'

किसान ने कहा :

'अच्छा, अच्छा ! किन्तु इतना ध्यान रखना ।'

'तुम्हें बड़ों की तरह काम करना पड़ेगा ।'

'सभी की पंक्ति में रहना पड़ेगा, उन लोगों जितना ही काम करना पड़ेगा ।'

'बोलो हो तैयार ?'

बीच में से चला जायगा तो एक पैसा भी नहीं दूँगा ।'

मोटा ने खुश होकर हाँ कहा ।

वे खेत में लग गये ।

मजदूर की लम्बी कतार में खड़े रह गए ।

किन्तु धान का पौधा बोना यानें क्या ?

दिनभर पानी से भरी हुई क्यारी में खड़ा रहना पड़ता ।

कितनी ही बार मूसलाधार बरसात भी बरसता हो ।

दिनभर गीले में खड़े खड़े झुककर पौधे बोने पड़ते ।

नन्हे से मोटा दिनभर मुसलाधार बरसात में पैर धँस जाँए ऐसे कीचड़ में ठीक काम करते ।

छोटे बालक का कितना बल ?

शाम को मोटा थककर चकनाचूर हो जाते !

किन्तु मोटा थकान की परवा न करते ।

उन्हें तो घर में माता-पिता को थोड़ी-बहुत मदद करने में ही संतोष !

■

७. वचन-पालन

मोटा के घर एक गाय थी ।

गाय को बाँधने की जगह नहीं ।

इसलिए घर के पास रास्ते पर ही उसे बाँधते ।

माँ घर का सब काम करतीं ।

फिर दूसरों के घरों में भी माँ काम करने रोज जातीं ।

इससे गाय की देखभाल नहीं हो पाती ।

एक दिन माँ ने घर में कहा :

'अपना गुजारा मुश्किल से होता है ।

तो फिर गाय को कहाँ से खिलायें ?

'गायमाता भूखी रहेगी तो हमें ही पाप लगता ।'

फिर मैं दिनभर काम के बोझ से दबी रहती हूँ ।

'इसलिए मैं गाय की देखभाल नहीं कर पाती हूँ ।'

'मुझे यह बात दिल में खटकती है ।'

'इसलिए हम गाय को बेच दें तो अच्छा ।'

नन्हे से मोटा कोने में बैठकर पढ़ाई करते थे ।

माँ की बात सुनकर मोटा बोले :

'माँ, यह गाय तुम्हारा बालक होता तो ?'

यह सुनकर माँ बोल उठी :

'अरे चूनिया, तुम्हें बीच में बोलने की बहुत बुरी आदत है ।'

'चुपचाप पढ़ाई किया कर ।'

'गाय को पालना यह कोई आसान काम नहीं ।'

'इसका तुमने विचार किया है क्या ?'

'हमारे पास गाय को बाँधने के लिए अलग जगह नहीं है ।'

'गाय के लिए खरीदकर घास भी नहीं ला सकते हैं ।'

'गोबर-मूत्र से रास्ता बिगड़ता है ।'

'इसी कारण रोज मुझे गाँववालों का सुनना पड़ता है ।'

'इन सब का विचार करो ।'

'अक्ल बिना की बात मत करो ।'

'तुम्हारे से यह सब हो सकेगा क्या ?'

'फिर पढ़ाई कब करोगे ?'

मोटा ने शांति से माँ को कहा :

'माँ तेरी बात सच्ची है ।'

'गाय के लिए घासचारा मैं ले आऊँगा ।'

'गाय को रोज नहलाऊँगा ।'

'फिर मेरी पढ़ाई भी ठीक करूँगा ।

उस में जरा भी कमी नहीं आने दूँगा ।

बोल, माँ अब तो गाय को नहीं बेचोगी न ?'

'गाय तो हमारी माता कहलाती है ।'

'उसकी तो पूजा करनी चाहिए ।'

'माँ ने तो नन्हे से मोटा की बात हँसकर टाल दी ।'

माँ ने कहा :

'अब रहने दे अपनी डींग मारना !'

'बोलना आसान है, किन्तु पालन करना कठिन ।'

'देखती हूँ, तू गाय की कैसे देखभाल करता है ।'

'तू बोला हुआ कर के बता तो सही ।'

दूसरे ही दिन मोटा शीघ्र उठे ।

गोबर उठाकर एक तरफ ढेर किया ।

गाय के गोबर-मूत्र से रास्ते पर गंदगी हो गई थी ।

मोटा ने उस जगह में कोरी मिट्टी छिड़क दी !

इससे सीलन कम हुई ।

मक्खियाँ भिनभिनानी कम हो गईं ।

अब घासचारा का क्या ?

कालोल गाँव तहसील का मुख्य केन्द्र ।

वहाँ व्यापार अच्छा चलता ।

बड़े सवेरे आसपास के गाँवों से बैलगाड़ियाँ आतीं ।

बैलगाड़ियों में अनाज, साग-सब्जी आदि लाते ।

गाँव के सिवान पर सभी बैलगाड़ियाँ खुलती ।

गाड़ीवाले बैलों को खोल देते ।

घास के पूलों को खाने देते ।

फिर वे बाजार में काम के लिए जाते ।

काम पूरा करके गाँव के लोग सिवान पर लौट जाते।

शाम को सभी बैलगाड़ियाँ चली जातीं ।

मोटा शाम को सिवान पर जाते ।

वहाँ खाये बिना के अच्छे पूलों को इकट्ठे करते ।

उन सब की गठरी बाँधकर मोटा घर ले आते ।

पूले गाय को डालते ।

मोटा जिस पाठशाला में पढ़ते थे, वहाँ किसानों के लड़के भी पढ़ने आते ।

मोटा की दोस्ती सभी विद्यार्थियों से थी ।

मोटा सुबह या शाम को उन लड़कों के खेत में जाते ।

उनकी अनुमति लेकर खेत के किनारे उगी घास काटते ।

गाय को ताजा हरा घास प्रेम से खिलाते ।

यह सब देखकर माँ खुश खुश हो गई ।

माँ को हुआ :

'चूनिया ने अंत में वचन का पालन किया ।'

८. पाठशाला में सफाई काम करके पढ़े

उन्हीं दिनों कालोल में अंग्रेजी पाठशाला नई शुरू हुई ।

मोटा को अंग्रेजी पाठशाला में पढ़ने का बहुत मन हुआ ।

किन्तु पाठशाला नई, इसलिए फीस रखी थी ।

अब फीस कहाँ से लाएँ ?

घर से किसी प्रकार की मदद न मिले ऐसी स्थिति थी।

मोटा उलझन में पड़ गए ।

किन्तु जहाँ दृढ़ निश्चय हो, वहाँ भगवान रास्ता खोल देते हैं ।

इतने में मोटा को एक उपाय मिल गया ।

वे हिंमत करके पाठशाला के मुख्य शिक्षक के पास गए ।

मोटा ने मुख्य शिक्षक को प्रणाम किया ।

विनयपूर्वक मोटा ने कहा :

'साहब मुझे आप की पाठशाला में पढ़ना है ।'

'मेरे घर की स्थिति गरीब है ।'

'इसलिए फीस देने की शक्ति नहीं है ।'

परंतु साहब मुझ पर इतनी कृपा करें ।'

'मेरे लिए पाठशाला में सफाईकाम का प्रबंध कर दीजीए ।'

'उसमें से मैं फीस आदि का खर्च निकालूँगा ।'

मुख्य शिक्षक भले और समझदार थे ।

उत्साही विद्यार्थी की बात सुनकर वे खुश हुए ।

उन्होंने मोटा को पाठशाला का सफाईकाम सौंपा ।

मोटा ने दूसरे ही दिन से सफाईकाम आरंभ कर दिया ।

मोटा पाठशाला का पूरा मकान ठीक से बुहारते ।

बेन्चों, कुर्सियों, टेबलों, पाट आदि सभी को झाड़कर ठीक से साफ करते ।

काम में मोटा जरा भी कमी न करते ।

कभी कभी मोटा को चपराशी का काम भी सौंपा जाता ।

मोटा उस काम को भी उत्साह से करते ।

बचपन से ही मोटा में एक बड़ा सद्‌गुण था ।

'अपने हिस्से में जो कुछ काम आये, उसे सच्चे दिल से और व्यवस्थित करते ।'

'जरा भी आलस्य या प्रमाद नहीं ।'

मोटा ऐसे सब काम करते और पढ़ते भी ठीक से ।

मोटा समझते थे कि –

'मैं पढ़ने के लिए पाठशाला में दाखिल हुआ हूँ ।'

'पढ़ने के लिए पाठ़शाला में सफाईकाम करता हूँ ।'

'इसलिए मेरा प्रथम धर्म ध्यानपूर्वक अभ्यास करना है ।'

'इसमें गलती नहीं चले ।'

इसलिए मोटा बहुत मन लगाकर पढ़ाई करते ।

कक्षा में प्रथम नंबर रखते ।

■

९. डेढ़ साल में चार कक्षाएँ

मोटा कालोल में अंग्रेजी पाठशाला में पढ़ते थे ।

मोटा पढ़ते थे सही ।

किन्तु उन्हें बार-बार घर की गरीबाई के विचार आते रहते ।

जल्दी-जल्दी पढ़ाई पूरी हो जाए तो कितना अच्छा !

किसी नौकरी में जल्दी लग जाऊँ ।

जिससे माता-पिता की तकलीफों में कुछ राहत दे सकूँ ।

एक दिन मोटा को विचार आया :

'प्रभुकृपा से दो-चार वर्ष एक साथ कूद जाएँ तो कितना अच्छा ।'

'मेरे इतने वर्ष बच जाय ।'

मोटा ने मुख्य शिक्षक को बात करने की सोची ।

मोटा में बचपन से एक बात की स्पष्ट समझ थी ।

'हम शुभ हेतु से कुछ करना चाहते हैं तो प्रार्थना भाव से प्रभुजी के चरणों में व्यक्त करते रहना चाहिए ।

'इससे हमारे उस शुभ हेतु का फल अच्छा आये ।'

'अपने विरोधी के लिए भी मन में सद्भाव रखें ।'

'उसका भला होने के लिए प्रार्थना करनी ।'

'ऐसा करने से उसके साथ सुमेल होता है ।'

विद्यार्थी मोटा ने अपना शुभ हेतु नजर समक्ष रखा ।

दिल में प्रार्थना का भाव दृढ़ किया ।

इस तरह मुख्य शिक्षक के साथ संबंध जोड़ा ।

मोटा मुख्य शिक्षक के घर जाते ।

बाजार से साग-सब्जी आदि ले आते ।

घर के कामों में कुछ न कुछ मदद करते ।

घर के बालकों को हँसाते, उनके साथ खेलते ।

इससे मुख्य शिक्षक की पत्नी भी मोटा पर सद्‌भाव रखतीं ।

मोटा को कुछ न कुछ खाने को भी देतीं ।

घर के बच्चों जैसा भाव रखतीं ।

ऐसा करते-करते मोटा घर के आदमी जैसे हो गए।

मुख्य शिक्षक भी मोटा को पढ़ाई में मदद करते ।

फिर मोटा ने एक दिन बात-बात में मुख्य शिक्षक को कहा :

'साहब, मेरे घर की स्थिति आप जानते हैं ।'

'इसलिए मुझे कम समय में अधिक कक्षाएँ एक साथ करनी हैं ।'

'कुछ वर्ष बचें तो पिताजी को जल्दी मदद कर सकूँगा ।'

मुख्य शिक्षक उन्हें मदद करने तैयार हुए ।

मोटा भी मेहनत से पढ़ने लगे ।

उन्होंने अंग्रेजी की चार कक्षाएँ डेढ़ वर्ष में पूरी कीं ।

■

१०. निरीक्षक का दिल जीता

मोटा ने मुख्य शिक्षक की मदद से डेढ़ वर्ष में अंग्रेजी की चार कक्षाएँ पूरी की सही ।

किन्तु परीक्षा का क्या ?

मोटा ने मुख्य शिक्षक को इस विषय में पूछा ।

'मुझे परीक्षा लेने में कोई आपत्ति नहीं है ।'

'परंतु इसके लिए शिक्षा-विभाग की मंजूरी लेनी पड़ेगी ।'

मोटा इस कठिनाई में से मार्ग निकालने के लिए तत्पर हुए ।

'हिंमते मर्दा तो मददे खुदा ।'

मोटा हिंमत करके निरीक्षक साहब के पास पहुँच गए ।

मोटा उनके पास जाकर प्रणाम करके खड़े रहे ।

साहब ने सिर पर पगड़ी पहनी थी ।

इस पर मोटा का ध्यान गया ।

मोटा ने उनको विनयपूर्वक कहा :

'साहब, एक बात कहूँ ?'

'आपकी पगड़ी फीकी हो गई है ।'

'मुझे रंगने दीजिये ।'

'मैं अच्छी तरह रंग कर के ले आऊँगा ।'

साहब को नन्हासा लड़का पसंद आ गया ।

उन्होंने मोटा को अपनी पगड़ी रंगने दी ।

मोटा ने बहुत सावधानी से पगड़ी को अच्छी रंगी ।

मोटा के पिता रंगरेज थे ।

इस लिए मोटा को रंगने का काम आता था ।

उन्होंने मन लगाकर पगड़ी को रंगी ।

मोटा को तो किसी भी ढंग से साहब को खुश करना था ।

मोटा पगड़ी लेकर साहब के पास गए ।

साहब ने पगड़ी पहनी ।

सुंदर पगड़ी देखकर साहब खुश खुश हो गए ।

साहब ने मोटा को शाबाशी दी ।

इतनी अच्छी पगड़ी रंगने के लिए साहब मोटा को पैसे देने लगे ।

मोटा ने विनयपूर्वक पैसे लिए ही नहीं ।

साहब ने मोटा को कहा :

'मुन्ना, कुछ कामकाज हो तो कहना ।'

मोटा को भी यही चाहिए था ।

उन्होंने नम्रतापूर्वक साहब को प्रार्थना की ।

'साहब, एक बिनती है ।'

'मेरे घर की स्थिति बिहुत कमजोर है ।'

'इसलिए मुझे कम समय में पढ़ाई पूरी करनी है ।'

'जिससे पिताजी को मदद करने के लिए काम पर लग जाऊँ ।'

'मैंने मिडल स्कूल की पूरी पढ़ाई ठीक से कर ली है।'

'अब अंतिम परीक्षा बाकी है ।'

'यह परीक्षा लेने की सत्ता आपश्री के हाथ में है ।'

'कृपा करके मुझे परीक्षा देने की अनुमति दें ।'

'मैं आप का आभार कभी नहीं भूलूँगा ।'

'मुन्ना, घबराना नहीं ।'

'सब कुछ हो जायगा ।'

एक दिन साहब पाठशाला की मुलाकात लेने आये ।

उन्होंने मुख्य शिक्षक से मोटा की पढ़ाई के विषय में पूछा ।

मुख्य शिक्षक मोटा की पढ़ाई से, उनके विनय विवेक से, उनके कामकाज से खुश थे ।

मुख्य शिक्षक ने मोटा के विषय में बहुत अच्छा अभिप्राय दिया ।

साहब को संतोष हुआ ।

उन्होंने मोटा की परीक्षा का प्रबंध कर दिया ।

मोटा ने बहुत अच्छी तरह से परीक्षा पास की ।

■

११. मेरा काम देखें, बाद में रखें

कालोल गाँव में अंग्रेजी चार कक्षा तक की ही पाठशाला थी ।

पाँचवी कक्षा के लिए अन्य गाँव को जाना पड़ता ।

माता-पिता ने मोटा को कहा :

'बेटा, अधिक पढ़कर क्या करोगे ?'

'हम रहे गरीब आदमी !'

'इतनी पढ़ाई बहुत हो गई ।'

'अब कहीं धंधे में लग जा ।'

'घर में दो पैसे की मदद होगी ।'

मोटा उम्र में छोटे थे ।

पर समझदार अधिक थे ।

मोटा को भी हुआ :

'पिताजी बेचारे कितना करेंगे ?'

'माँ भी दूसरों के घरों में काम करके थक जाती है ।'

'अभी कुछ समय कुछ काम धंधा कर लूँ ।'

'बाद में पढ़ाई होती रहेगी ।'

मोटा नौकरी करने तैयार हो गए ।

पिताजी उनको गोधरा ले गए ।

पिताजी को गोधरा में एक व्यापारी पहचानते थे ।

पिताजी उनके पास गए ।

पिताजी ने घर की स्थिति के विषय में बात की फिर पिताजी ने प्रार्थना करते हुए कहा :

'शेठजी, मेरे बेटे को आपकी दुकान में नौकरी पर रख लीजिए ।'

'बड़ी मेहरबानी होगी ।'

व्यापारी लड़के जैसे मोटा को देखकर बोले :

'भगत, आपका बेटा तो अभी छोटा है ।'

'उसे नौकरी पर रखकर क्या करूँगा ?'

'उसे काम भी कौन-सा दूँ ?'

'उससे काम नहीं होगा !'

यह सुनकर मोटा ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा :
'शेठजी, थोड़े दिन मेरा काम देख लें ।'
'ठीक लगे तो रख लीजियेगा ।'
व्यापारी ने मोटा को रख लिया ।
उसने मोटा को दुकान में झाड़ू लगाने का काम सौंपा।
दूसरे छुटपुट काम भी सौंप दिये ।
मोटा रोज सुबह जल्दी से उठ जाते ।
दूकान की चाबी ले जाकर दुकान खोलते ।
सबकुछ झाड़ पोंछकर ठीक से सफाई करते ।
मोटा ने शेठजी की गद्दी पर चादर देखी ।
तकिये के गिलाफ आदि देखे ।
ये सभी बहुत मैले थे ।
स्याही के काले दागवाले थे ।
मोटा को छोटा से छोटा काम भी अच्छे से अच्छे ढंग से करना पसंद था ।
फिर भी मोटा तो शेठजी का दिल जीतना चाहते थे।
तो ही शेठ उन्हें नौकरी पर रखेंगे न ?
मोटा चादर, गिलाफ आदि रोज घिस घिस कर धोते।
एक भी सिलवट न पड़े ऐसे बिछाते ।
मोटा सब कुछ साफ-सुथरा रखते ।

मोटा दुकान में दाखिल होते तब दुकान को भावपूर्वक वंदन करते ।

कंकू, फूल, चावल, रोज देहली पर चढ़ाते ।

मन में शुभ प्रार्थना करते ।

शेठजी नन्हा सा लड़का का व्यवस्थित और सुघड़ काम देखा करते ।

शेठ बहुत प्रसन्न हुआ ।

उसने मोटा को नौकरी पर रख लिया ।

वेतन महीने में मात्र पाँच रुपये ।

उस समय में इतने भी बहुत कहलाते ।

■

१२. झूठ का व्यापार नहीं होगा !

मोटा व्यापारी के यहाँ जम गए ।

व्यापारी को हुआ :

'लड़का छोटा है पर होशियार और मेहनती है ।'

उसमें कार्यकुशलता भी है ।

'जिम्मेदारीवाला काम करे ऐसा है ।'

इसलिये व्यापारी धीरे-धीरे जिम्मेदारीवाला काम सौंपने लगा ।

गाँवों से किसान अनाज की गाड़ियाँ लेकर आते ।

व्यापारी ने मोटा को बुलाकर कहा :

'लड़के, तुम्हें अनाज तोलना आता होगा ।'

'इन किसानों का अनाज तोलने बैठो ।'

'देखना ठीक से तोलना ।'

'हमें घाटा नहीं होना चाहिए ।'

'ठीक ध्यान से काम करना ।'

मोटा किसानों का अनाज तौलने बैठ गए ।

मोटा सभी को समान रीत से तौल देते ।

व्यापारी सामान्य रूप से एक मन पर दो-ढ़ाई शेर अधिक अनाज ले लेते ।

वे इसे गलत न मानते ।

शेठ को लगा :

इस लड़के को इस ढंग से तोलना आता होगा ?

'लड़के, तुम्हें तोलने का ढंग सिखाता हूँ ।'

'इसे तुम ध्यान से देखो ।'

बाद में व्यापारी मोटा को पाठ सिखाने लगा :

'तराजू पर बड़ी चालाकी से डंडी मारनी चाहिए ।

सामनेवाले आदमी को इस का पता नहीं चलना चाहिए ।

'आसानी से एक मन में दो से ढाई शेर अनाज अधिक आ जाय ।'

व्यापारी ने उस तरीके से तोलकर भी बताया ।

मोटा ने यह सब शांति से देखा ।

फिर मोटा तोलने के काम में लग गए ।

पर मोटा ने इस गलत तरीके का उपयोग न किया ।

सही माप के अनुसार ही मोटा अनाज तोलने में लग गए ।

एक दिन एक किसान के मन में संशय हुआ ।

'यह लड़का मुझसे छल कपट तो नहीं कर रहा है न ?'

'अधिक अनाज तोल लेता होगा ।'

इसलिए वह किसान झगड़ा करने लगा :

'ऐ मुन्ना ! जरा ठीक से अनाज तोल न !'

'ऐसे अधिक अनाज कैसे ले लेते हो ?'

'क्या हमें गँवार समझ रखा है ?'

शोरगुल सुनकर व्यापारी वहाँ दौड़ आया ।

उसने किसान को शांत करते कहा :

'भाई, क्यों चिल्ला रहे हो ?'

'जो कुछ भी हो मुझे कहो न !'

किसान कुढ़कर बोला :

'लगता है कि यह लड़का जल्दी से अनाज तोलकर अधिक अनाज ले लेता है ।'

'आजकल का लड़का आँख में धूल झोंककर हमें छल जाय, यह कैसे चले ?'

'हराम का माल नहीं है ।'

'पसीना बहाकर पकाया है ।'

व्यापारी के मन में छटपटाहट हो गई ।

'अरे, मैंने ही उस लड़के को गलत ढ़ंग से अनाज तोलना सिखाया है ।'

'यह किसान अनाज को फिर से तोलने को कहेगा तो भंडा फूट जाएगा । अब क्या होगा ?'

'बेचारा गरीब लड़का झूठा समझा जायगा ।'

व्यापारी बचाव करने के लिए कुछ स्वस्थता से बोला :

'अरे पटेल ! आप तो सही हो ।'

'आप का एक भी कण हराम का लेना, हमें हज़म नहीं होगा ।'

'यह लड़का ऐसा करे, ऐसा नहीं है ।'

'मैं उसे ठीक पहचानता हूँ ।'

'वह हाथ का साफ है ।'

किन्तु किसान एक का दो न हुआ ।

उसने दोबारा अनाज तोलने को कहा ।

व्यापारी का जी घबराने लगा !

उसे मन में हुआ :

'बेचारे लड़के ने मेरे कहे अनुसार ही अनाज तोला होगा ।'

'अब क्या होगा ?'

परन्तु मोटा को कुछ भय न था ।

वे शांत बैठे रहे ।

दूसरा एक आदमी अनाज तोलने लगा ।

देखा कि वजन के अनुसार ही अनाज तोला था ।

एक मुट्ठीभर भी अनाज अधिक न था ।

किसान शर्मिंदा हो गया ।

फिर वह किसान गया ।

इसलिए शेठ ने मोटा को धमकाकर कहा :

'अबे, तुम तो मेरा दिवाला निकालो ऐसे हो ।'

'व्यवहार करना सीखो ।'

'इस दुनिया में सत्यवादी हरिश्चंद्र का काम नहीं है ।'

'इसलिए अब जरा होशियार बनो ।'

'मैंने बताया है, उसके अनुसार तोल करो ।'

मोटा ऐसा झूठ कैसे पसंद करे ?

मोटा ने विनय से कहा :

'शेठजी, माफ करना ।'

'मुझ से झूठा व्यापार नहीं होगा ।'

'मेरा मन ना कहता है ।'

मोटा को पैसों की जरूरत थी ।

पिताजी को मददरूप होने की इच्छा थी ।

फिर भी मोटा ने नौकरी छोड़ दी ।

■

१३. विद्या विनय से सुशोभित

अब घर बैठ के क्या करें ?

मोटा को आगे पढ़ने की इच्छा थी ।

परंतु कालोल में तो अंग्रेजी चार कक्षा तक ही पाठशाला थी ।

पिताजी दूसरी जगह भेज न सकें ऐसा था ।

तो वहाँ कालोल की पाठशाला के मुख्य शिक्षक मोटा की सहाय में आए ।

उनका नाम था घनश्यामराय महेता ।

सभी उन्हें घनुभाई कहकर बुलाते ।

घनुभाई को होशियार विद्यार्थिओं प्रति स्नेह था ।

मोटा होशियार और विनयशील विद्यार्थी थे ।

'विद्या विनय से शोभा देती है ।'

मोटा सभी का दिल विनय से जीत लेते ।

घनुभाई को मोटा की पढ़ाई की चिंता होती थी ।

ऐसा सुयोग्य विद्यार्थी पढ़ने के बदले में नौकरी की मायाजाल में पड़े, यह उन्हें कैसे पसंद हो ?

घनुभाई ने एक दिन मोटा को बुलाकर पूछा :

'तुम्हें आगे पढ़ने के लिए पेटलाद जाना है ?'

मोटा ने अपनी कठिनाई बताई :

'साहब, पढ़ने के लिए कहीं भी जाने के लिए मैं तैयार हूँ ।'

'परन्तु जाऊँ कैसे ?'

'खर्च की कठिनाई है ।'

घनुभाई ने उसकी व्यवस्था कर दी ।

उनकी मौसी पेटलाद में रहतीं थी ।

उनका नाम था प्रभाबा ।

प्रभाबा कई बार कालोल आतीं ।

इसलिए वे मोटा को पहचानतीं थी ।

घनुभाई ने मौसी से बात की ।

मौसी मोटा को अपने घर में रखने के लिए तैयार हुए ।

प्रभाबा गरीबों के प्रति सहानुभूति रखतीं ।

जरूरत पड़ने पर मदद करतीं ।

मोटा पढ़ाई के लिए उनके घर में रहे, यह उन्हें पसंद आया ।

किन्तु मोटा के मन में हुआ :

'मैं दूसरों के घर में रहता हूँ ।'

'किसीको मैं बोझ न बन जाऊँ ।'

'ऐसे ढंग से रहूँ कि घर के लोग खुश हो ।'

इसलिए मोटा घर के छोटे-मोटे कामों में उत्साह से मदद करने लगे ।

नौकरों के साथ मिलकर काम करने लगते ।

रसोई करनेवाले महाराज को भी मदद करते ।

घर के छोटे बच्चों को हँसाते-खेलाते ।

अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते ।
पढ़ाते भी सही ।
मोटा थोड़े ही दिन में सभी के साथ हिलमिल गए।
दूध में मिसरी मिल जाय वैसे ।
मोटा का स्वभाव मिलनसार और प्रेमपूर्ण ।
इसलिए मोटा घर के सदस्य जैसे बन गए ।
पेटलाद हाईस्कूल के आचार्य ईश्वरभाई पटेल थे ।
वे विद्यार्थिओं के हित का ठीक से ध्यान रखते ।
गरीब, निराधार, मेहनती विद्यार्थी को सहायता करने सदा तैयार ।
पढ़ाई में भी वे मदद करते ।
ऐसे प्रेमी आचार्य मोटा को मिले ।
जैसे सोना में सुगंध मिली ।
मोटा की पढ़ाई अच्छी चली ।

■

१४. संत ने सहायता की

जानकीदासजी नामक एक संत थे ।
वे यदाकदा पेटलाद आते रहते थे ।
रंगवाला शेठ धार्मिक थे ।

संत-साधु के चाहक थे ।

कोई न कोई संत-साधु उनके यहाँ आते ही रहते ।

जानकीदासजी का मुकाम उनके यहाँ रहता ।

मोटा जानकीदासजी के दर्शन के लिए जाते ।

सामान्यरूप से लोग साधु-संतों के दर्शन के लिए जाते, उनका उपदेश सुने और एक तरफ बैठे रहते ।

मोटा को यह अच्छा नहीं लगता ।

मोटा महाराजश्री के कमरे को झाड़-पोंछकर साफ करते ।

उनके कपड़े सूख गए हों तो ठीक से तहकर के उसकी जगह में रख देते ।

कमरे में वस्तुएँ इधर-उधर पड़ीं हों तो सभी वस्तुओं को व्यवस्थित कर देते ।

ऐसे विद्यार्थी मोटा कुछ न कुछ काम करते ही रहते ।

जानकीदासजी यह सब ठीक से देखते ।

एक दिन जानकीदासजी ने मोटा को पास बुलाकर पूछा :

'मुन्ना, तुम कहाँ रहते हो ?'

'क्या पढ़ते हो ?'

मोटा ने संतजी को सब बात कही ।

जानकीदासजी ने सब बात ध्यान से सुनी ।

फिर मोटा के सिर पर हाथ फेर कर पीठ थपथपाकर संतजी ने कहा :

'पढ़ाई में कभी आलस न करना ।'

'मेरा कुछ कामकाज हो तो जरा भी संकोच न किए कहना ।'

ऐसे करते-करते मोटा मैट्रिक में आए !

उस समय जानकीदासजी ने मोटा को पास में बुलाकर प्रेम से कहा :

'बेटा, तुम अब मैट्रिक में हो ।'

'सारी पढ़ाई दो महीने में जल्दी से पूरी कर डालना ।'

मोटा ने संतजी को हाथ जोड़कर कहा :

'महाराज, यह कैसे होगा ?'

'मैं ठहरा गरीब ।'

'कोई शिक्षक का ट्यूशन भी कैसे रख सकता हूँ ।'

'मेरे अकेले से पढ़ाई नहीं होगी ।'

संतजी ने प्यार से कहा :

'बच्चा, तू जरा भी घबराना नहीं ।'

'मैं इसका प्रबंध कर दूँगा ।'

फिर संतजी ने पाठशाला के शिक्षकों को बुलाकर कहा :

'इस लड़के को दो महीने में मैट्रिक की सारी पढ़ाई पूरी करवा डालो ।'

'कोई भी विषय कच्चा न रह जाय ।'

शिक्षकों ने खास ध्यान देकर उसी अनुसार किया ।

अब प्रिलीमिनरी परीक्षा को थोड़ी देर थी ।

मोटा अपने बड़े भाई को मिलने अहमदाबाद गए ।

वहाँ वे बहुत बीमार पड़ गए ।

बीमारी लम्बी चली ।

अंत में ठीक हुए सही ।

किन्तु शरीर बहुत कमजोर पड़ गया ।

डाक्टर ने यह देखकर सलाह दी :

'इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा न दें ।'

'पूरा आराम करें ।'

'नहीं तो दुबारा बीमारी आ सकती है ।'

मोटा पेटलाद आए ।

उन्होंने आचार्य साहब से बात की ।

आचार्यश्री ने मोटा को हिंमत दी ।

परीक्षा दे देने की सलाह दी ।

उन्होंने कहा :

'तुमने बहुत जल्दी से पूरी पढ़ाई कर डाली है ।'

'तुम जरूर अच्छे नंबरों से पास हो जाओगे ।'

'भगवान का नाम लेकर परीक्षा दे दे ।'

इसी दौरान जानकीदासजी पेटलाद आए ।

मोटाने रोती हुई आवाज में संतजी को हाथ जोड़कर सब बात कही ।

जानकीदासजी प्यार से बोले :

'बेटा, तू अवश्य अच्छे ढंग से पास हो जायगा ।'

'हिंमत नहीं हारना ।'

'प्रभु का नाम लेकर परीक्षा दे दो ।'

मोटा ने हिंमतपूर्वक परीक्षा दे दी ।

मोटा, अच्छे नंबरों से पास हो गए ।

■

१५. वडोदरा कॉलेज में

मोटा मैट्रिक में बहुत अच्छे नंबर पाकर पास हुए।

गणित, संस्कृत और गुजराती में सत्तर प्रतिशत से अधिक अंक आए थे ।

पेटलाद हाईस्कूल में प्रथम आए थे ।

इसलिए उन्हें इनाम भी मिला था ।

ऐसे आशास्पद विद्यार्थी मोटा थे ।

मोटा को प्रभुकृपा से कॉलेज में जाने के लिए सहायता भी मिल गई ।

मोटा वडोदरा कॉलेज में दाखिल हुए ।

मोटा ने अपनी नजर समक्ष एक आदर्श रखा था :

'जिनकी मदद से कॉलेज में पढ़ने का अवसर मिलाता है,

उनकी कम से कम रकम खर्च हो तो अच्छा ।'

'किसी की मदद का दुरुपयोग न हो ।'

'असुविधा भले ही सहनी पड़े ।'

'पर दूसरों के पैसे से सुविधा भोगी न बनें ।'

'बहुत कम खर्च में रहें ।'

'तो ही भगवान बरकत देते हैं ।'

वडोदरा कॉलेज में पढ़ाई की व्यवस्था हो गई ।

परंतु रहें किधर ?

यह एक बड़ा उलझनवाला प्रश्न था ।

सहाय करनेवाले मोटा के लिए होस्टेल में रहने की सुविधा कर देते ।

किन्तु मोटा को ऐसा लाभ लेना न था ।

एक भाई वडोदरा कॉलेज में फेलो हुए थे ।

वे कालोल के वतनी थे ।

वह भाई, मोटा को अच्छी तरह से पहचानते थे ।

मोटा ने उस भाई को विनती की :

'भाई, मेरे ऊपर मेहरबानी करो ।'

'मेरी गरीब परिस्थिति आप जानते हैं ।'

'होस्टेल का खर्च मुझ से पूरा न होगा ।'

'मैं कमरे को साफ रखूँगा ।'

'आपका सारा काम भी करूँगा ।'

उन्होंने खुश होकर हाँ कहा ।

■

१५. डेढ़ आने में भोजन

अब मोटा के सामने भोजन का सवाल आया ।

हॉस्टेल के रसोईघर में भोजन महँगा पड़ता ।

एक महीने का भोजन खर्च तेईस-चौबीस रुपये जितना होता था ।

इतनी रकम उन्हें सहायता करनेवाले सज्जन अवश्य देते ।

परन्तु मोटा ने तो मन में निश्चय कर लिया था :

'कम से कम खर्च में प्रभुकृपा से निर्वाह हो सके तो अच्छा ।'

'मानो कि मुझे कोई पैसों की मदद देनेवाला न होता तो ?'

'इसलिए ऐसी समझ रखकर ही व्यवस्था करनी अच्छा है ।'

प्रभुकृपा से मोटा को उपाय सूझा ।

वडोदरा शहर के मध्य में मांडवी विभाग है ।

उसकी एक ओर चांपानेर दरवाजा है ।

उसी ओर जाते हुए वैष्णवों की हवेली (मंदिर) आती है ।

मोटा बचपन में उस हवेली में गए थे ।

मोटा को अचानक वह याद आई ।
मोटा ने हवेली ढूँढ़ ली ।
मोटा वहाँ के मुखियाजी को मिले ।
पैरो में पड़कर उन्होंने विनती की :
'महाराज, मैं वडोदरा कॉलेज में पढ़ता हूँ ।'
'रोज मुझे भगवान का प्रसाद लेना है ।'
'कृपा करके रोज एक पत्तल देना ।'
'आपका बड़ा उपकार होगा ।'
मुखियाजी ने खुशी से हाँ कर दी ।
एक पत्तल प्रसाद की कीमत कितनी ?
मात्र डेढ़ आना ! (आज के ९.३ पैसे)
भोजन संपूर्ण शुद्ध ।
फिर शुद्ध घी का !
मोटा सुबह हॉस्टेल में से जल्दी निकलते ।
ढाई मील जाने के और ढाई मील आने के ।
फुटपाथ पर चलते-चलते पढ़ना ।
हवेली में जाकर मोटा नहा लेते ।
पत्तल का भोजन करके लौटते ।
यह रोज का कार्यक्रम था ।

परंतु करीब छः महीने के बाद प्रभाबा को इस बात का पता चला ।

उन्होंने मोटा के लिए हॉस्टेल में भोजन की व्यवस्था कर दी ।

■

१७. बुरी लत को छोड़ो

कॉलेज की हॉस्टेल में कुछ विद्यार्थी 'चाय क्लब' चलाते थे ।

मोटा उन विद्यार्थिओं को चाय बनाकर देते ।

दिन में दो-तीन बार चाय बनाने का होता ।

फिर, कोई विद्यार्थी मोटा को छोटा-मोटा कुछ न कुछ काम सौंपता ।

मोटा उस काम को प्रेम से करते ।

मोटा दूसरों के लिए त्याग करने में मानते ।

ऐसा करने से हम सरलता से उनके दिल में स्थान पा लेते हैं ।

उनके साथ स्नेह-संबंध हो जाता है ।

इसलिए मोटा पढ़ाई के साथ-साथ बहुत सारे लोगों का कुछ न कुछ काम करते ।

मोटा सभी का काम आनंद से करते ।

इसलिए सभी विद्यार्थी मोटा के साथ अच्छा संबंध रखते ।

जरूरत पड़ने पर राजीखुशी से मदद भी करते ।

वे विद्यार्थी कभी नाटक या सिनेमा देखने जाते ।

वे मोटा को कैसे भूले ?

वे उनकी भी टिकिट ले लेते ।

कहीं घूमने जाते तब भी वे मोटा को साथ अवश्य ले जाते ।

मोटा उनके साथ जाते भी सही ।

परन्तु उनके उपयोग में आ सके, ऐसी सावधानी भी रखते ।

बेकार चर्चा या वादविवाद में पड़ते नहीं ।

एक दिन मोटा को अकेले सिनेमा देखने का मन हुआ ।

परंतु अकेले जाना हो तो टिकिट स्वयं निकालनी पड़े ।

मोटा की ऐसी सामर्थ्य न थी ।

इतने पैसे निकाले कहाँ से ?

मोटा के दिल में मंथन जगा ।

अंत में मोटा ने संकल्प किया :

'मित्र सिनेमा देखने ले जाए तो भी नहीं जाना ।'

'क्योंकि सिनेमा देखने की आदत पड़ जाय ।'

'फिर कभी अकेले सिनेमा देखने का मन हो आए ।'

इसलिए सबसे अच्छा रास्ता यह है कि,

'सिनेमा देखने का ही बंद ।'

'ऐसा शौक हमें न चले ।'

■

१८. गांधीजी की पुकार

कॉलेज की पढ़ाई में मोटा अच्छे लग गये थे ।

बी.ए. के अंतिम वर्ष में मोटा आ गए थे ।

मोटा के मन में हुआ :

'चलो ! इस वर्ष प्रभुकृपा से सरलता से निकल जाय तो अच्छा !'

'बी.ए. हो जाऊँगा ।'

'अच्छी नौकरी मिल जायगी ।'

'घर में मददरूप हो सकूँगा ।'

'सुख के दिन आएँगें ।'

वहीं एक बड़ा विस्फोट हुआ ।

महात्मा गांधीजी देश को आजादी दिलाने सत्याग्रह का आन्दोलन चला रहे थे ।

गांधीजी ने देश को युवकों को पुकार की ।

'सरकारी कॉलेजों का बहिष्कार करो ।'

मोटा को भी देश की स्थिति देखकर हुआ :

'अब कॉलेज में पढ़ना निकम्मा है ।'

'देश का काम देश का युवक न करें तो दूसरा कौन करेगा ?'

देश को आजाद करने के संग्राम में कूदने का मोटा ने निश्चय किया ।

■

१९. मोटा की उलझन

मोटा के लिए कॉलेज छोड़ देना, यह आसान न था ।

कॉलेज छोड़ देना यानी क्या ?

अच्छी पढ़ाई करके बड़े अमलदार बनने की मोटा की इच्छा थी ।

वह आशा टूटकर चकनाचूर हो जाय ।

दूसरा, कुटुम्बीजन भी मोटा पर आशा रखते थे ।

फिर मोटा को जो जो स्वजन मदद करते थे उनका क्या ?

उन सब का विचार था कि मोटा कॉलेज में पढ़ाई चालू रखे ।

मोटा उनकी भी नाराजगी झेलना नहीं चाहते थे ।

इस बात का मोटा को भी बहुत दुःख होता था ।

परन्तु मोटा का दिल कहता था :

'हमारा देश परतंत्र है ।'

'उसे आजाद कराना चाहिए ।'

'देश की सेवा करना मेरा धर्म है ।'

अब क्या करें ?

कुटुम्बीजन आदि समझाते थे कि मोटा कॉलेज-त्याग न करे ।

मोटा सभी को शांति से सुनते ।

परन्तु उनके दिल में भारी मंथन चला ।

किन्तु मोटा को होता था :

'देश की सहायता में जाने का हमारे जैसे युवकों का धर्म है ।'

'देश के लिए बलिदान देने के लिए युवकों को ही तैयार होना चाहिए ।'

'उनके सिवा अन्य कौन करेगा ?'
मोटा ऐसे विचारो में डूबे रहा करते थे ।

■

२०. कॉलेज को अलविदा !

साथ-साथ मोटा को होता था ।
'कॉलेज त्याग ने के बाद करना क्या ?'
मोटा के लिए कोरा अंधकार था ।
अंधेरे में कूदने का था ।
घर से मदद मिले ऐसी कोई संभावना न थी ।
मोटा ने अपने मन को बार-बार चेतावनी दी :
'आनेवाले दिन बहुत कष्टपूर्ण होंगे ।'
'कदाचित् भोजन की भी कठिनाई हो जाय ।'
'किसी की मदद की आशा रखना यह भी गलत है।'
'अब तो अपने बल पर जीना यह बात निश्चित है।'
इसलिए वह सब बातों का विचार करके आगे बढ़ना ।
वातावरण में बहुत उत्तेजना थी ।
कॉलेज के युवा विद्यार्थिओं में उत्तेजना थी ।
पढ़ाई करने का किसी को न सूझता था ।
बहुत-से विद्यार्थिओं ने कॉलेज का त्याग किया ।

उनमें से बहुत सारे विद्यार्थी पढ़ाई में बहुत तेजस्वी थे ।

उनका भविष्य उज्ज्वल था ।

परन्तु देश के लिए वे सब कुछ त्याग ने तैयार थे ।

मोटा ने वडोदरा कॉलेज का त्याग किया ।

उनके साथ कॉलेज त्यागने में दूसरे विद्यार्थी थे श्री पांडुरंग वळामे ।

जो आगे चलकर श्रीरंग अवधूत के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

सबसे पहले वडोदरा कॉलेज को अलविदा करनेवाले दो ही विद्यार्थी थे ।

श्रीमोटा और श्रीरंग अवधूत ।

■

२१. गुजरात विद्यापीठ में

महात्मा गांधीजीने सोचा :

'स्कूल-कॉलेज छोड़नेवाले विद्यार्थिओं की पढ़ाई अधूरी नहीं रहनी चाहिए ।'

'उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा मिलनी चाहिए ।'

इसलिए गांधीजी ने अहमदाबाद में विद्यापीठ शुरू की ।

उसका नाम 'गुजरात विद्यापीठ' ।

मोटा विद्यापीठ में दाखिल हुए ।

किन्तु खर्च कैसे निकले ?

मोटा विद्यापीठ के आचार्य के पास गए ।

उन्होंने आचार्यजी को अपनी गरीब स्थिति की बात की ।

मोटा ने सफाईकाम माँग लिया ।

मोटा कमरे में सफाई करने का, झाड़ू लगाने का आदि काम करने लगे ।

फिर हर सप्ताह में गांधीजी की 'नवजीवन' पत्रिका प्रकाशित होती थी ।

मोटा उसकी प्रतियाँ भी बिक्री करते ।

परंतु उसमें से भोजन का पूरा खर्च भी नहीं निकलता ।

कितनी ही बार एक समय का भोजन तो कोई बार चने-कुरमुरे खाकर दिन गुजारते ।

अपना भोजन खुद बना लेते थे ।

ऐसे मोटा विद्यापीठ में जम गए ।

■

२२. देशसेवा के कार्य में

एक दिन गांधीजी विद्यापीठ में आए ।

विद्यार्थिओं के समक्ष गांधीजीने कहा :

'मेरी तो धारणा थी कि

तुम सब कॉलेज छोड़कर देश का काम करने लग जाओगे ।'

'देश में बहुत से गाँव हैं ।'

'हमारे देश में क्या चल रहा है, उसका गाँव लोगों को पता नहीं ।'

'तुम गाँवों में जाओ, लोगों को सब समझ दो ।'

'मैं ने इस लिए तुम्हें कॉलेज का त्याग कराया है ।'

'तुमने एक डिग्री का मोह छोड़ा सही ।'

'किन्तु दूसरी डिग्री के मोह में लगे ।'

'कॉलेज छुड़वाने का मेरा हेतु क्या है ?'

'तुम युवक देश का काम करो ।'

'देश को जगाओ ।'

'मेरी बात को तुम गंभीरता से सोचो ।'

'तुम्हें ठीक लगे तो विद्यापीठ की पढ़ाई भी छोड़ दो ।'

'देश के काम में लग जाओ ।'

गांधीजी की बात मोटा को ठीक लगी ।

मोटा ने विद्यापीठ की पढ़ाई छोड़ दी ।

मोटा गाँव में सेवा करने गए ।

किन्तु वहाँ काम सेवा का योग्य प्रबंध हुआ नहीं ।

इसलिए मोटा विद्यापीठ में लौट आए ।

अब स्नातक होने में कुछ ही समय बाकी था ।

इतने में तो गांधीजी विद्यापीठ में वापस आए ।

गांधीजी ने विद्यार्थिओं को कहा :

'देश पूरा जल रहा है ।'

'तुम ठंडे़ दिमाग से बैठकर पढ़ाई कैसे कर सकते हो ?'

मोटा सचेत हुए ।

उनका युवा दिमाग फिर उछला ।

मोटा ने सदा के लिए पढ़ाई को अलविदा की ।

मोटा देशसेवा के कार्य में लग गए ।

॥ हरिः ॐ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

आरती

ॐ शरणचरण लीजिए, प्रभु शरणचरण लीजिए
पतित को उबार लीजिए (२) कर पकड़ हृदय लगा लीजिए...
ॐ शरणचरण.

मन-वाणी के भाव आचरण में उतरें प्रभु (२)
मन, वाणी और दिल को (२) कृपा कर एक करें...ॐ शरणचरण.

सभी स्वजनों के साथ, दिल में सद्भाव जगें, प्रभु (२)
भले अपमान हुए हो (२) तब भी भाव बढ़े...ॐ शरणचरण.

हीन प्रकार की वृत्ति; ऊर्ध्वगमन करें, प्रभु (२)
प्रभुकृपा से मथन करावें (२) चरणशरण पाने...ॐ शरणचरण.

मन के सकल विकार, प्राणयुक्त वृत्ति, प्रभु (२)
बुद्धि की सभी शंकाएँ (२) चरणकमल में द्रवित हो...ॐ शरणचरण.

जैसे भी हो प्रभु, वैसे ही दीखें, प्रभु (२)
मति मेरी खुली रहे (२) स्पष्ट ही परखें...ॐ शरणचरण.

दिल में कुछ भरा हो, उससे सब उल्टा, प्रभु (२)
मुझसे कभी न हो (२) ऐसी मति दें...ॐ शरणचरण.

जहाँ जहाँ गुण और भाव, वहीं दिल मेरा टिके, प्रभु (२)
गुण और भाव की भक्ति (२) मेरे दिल में संचरित करें...ॐ शरणचरण.

मन, मति, प्राण प्रभु । तुम्हारे भाव में तल्लीन रहे, प्रभु (२)
दिल में तुम्हारी भक्ति में (२) उमंगें-तरंगें तरंगित करें...ॐ शरणचरण.

— मोटा

॥ हरिः ॐ ॥

- हमारा शास्त्र कहता है कि, ''बालकों के लिए मातापिता का प्रेम अनिवार्य है।'' ('शेष-विशेष', पृ. ९९)
- ''जैसी शिक्षा मातापिता दे सकते हैं वैसी कोई नहीं दे सकता।'' ('शेष-विशेष', पृ. ९९)
- ''बालकों में बचपन से ही मान-अपमान का ख्याल होता है। इस विषय में हम जितना समझ से काम लें वही उत्तम है।'' ('जीवनसोपान', पृ. ८४)
- ''जो संस्कार बालकों को बचपन में मिलते है। वे उनके हृदय में सूक्ष्म रूप से दृढ़ हो जाते है और किसी न किसी समय ये संस्कार रूप में फूट निकलते है।'' ('जीवनपगथी से', पृ. ७६)
- ''जो 'जीव' बालकों के जीवन को नष्ट कर डालें, वे हमारी दृष्टि में राक्षसी प्रकृति के है।'' ('जीवनपोकार', पृ. ३८७)
- ''बालकों को प्यार करना किसी को आता ही नहीं। फिर बालक तूफान करते है तो उनकी शिकायत करते है, 'बालक खराब है, तूफानी है।' ऐसे वातावरण में बालक बिगड़ेंगे नहीं तो दूसरा क्या होगा?'' ('श्रीमोटा के साथ बातचीत', पृ. २१४)
- बालकों का ५ से ८ वर्ष का समय मानवजीवन में इतना उत्तम समय है कि बालकों का वह समय बरबाद न हो इसका हमें ध्यान रखना चाहिए।'' ('लग्ने हजो मंगलम्', पृ. ३५)

—मोटा